- मुख्यमंत्री कन्यादान एवं निकाह योजना के अंतर्गत तीन लाख से अधिक विवाह एवं निकाह हुए हैं।

वंचित वर्गों का विकास

- मध्यप्रदेश में मानव विकास सूचकांकों में लगातार वृद्धि हुई है। सन् 2001 में मानव विकास सूचकांक 0.34 था जो वर्ष 2011 में 0.451 हो गया है।
- वर्ष 2002-03 में आदिवासी विकास हेतु साल भर में मात्र 730 करोड़ रुपये का प्रावधान हुआ था। वर्ष 2015-16 में बढ़कर 4862.84 करोड़ प्रस्तावित है। यह वृद्धि लगभग 666 प्रतिशत की है।

शिक्षा

राज्य सरकार ने प्रदेश और लोगों के समग्र विकास में शिक्षा के महत्व को समझते हुए इसके गुणात्मक और संख्यात्मक विस्तार को तरजीह दी है।

- वर्ष 2003-04 में तकनीकी शिक्षण संस्थाएँ मात्र 186 थीं जो अब बढ़कर 728 हो गयी हैं।
- सितम्बर 2003 की स्थिति के अनुसार मध्यप्रदेश में 8,700 उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक संस्थाएँ थीं जो अब बढ़कर 13,950 से अधिक हो गई हैं।
- वर्ष 2004-05 में मध्यप्रदेश में 79 हजार 334 स्कूल थे जिनकी संख्या अब बढ़कर एक लाख 21 हजार 693 हो गई है।

गुड गवर्नेंस के लिये ई-गवर्नेंस

सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग प्रदेश में आम आदमी के जीवन को आसान बनाने तथा बेहतर और पारदर्शी प्रशासन देने के लिये किया जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में पिछले एक दशक में सूचना प्रौद्योगिकी और आई.टी. सेवाओं का ऐसा ढाँचा खड़ा किया गया है, जिसके जरिये जन-सामान्य को बेहतर सेवाएँ दी जा सकें।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- स्टेटवाइड एरिया नेटवर्क (स्वान)
- स्टेट डाटा सेंटर।
- आई.टी. पार्क।
- इलेक्ट्रॉनिक मेन्युफेक्चरिंग क्लस्टर।
- ई-प्रोक्योरमेंट और ई-टेण्डरिंग।
- वर्चुअल क्लास-रूम परियोजना।
- देश में सबसे पहले ई-मेल नीति लागू की गई।
- जी.आई.एस. लेब की स्थापना।
- ई-ताल पोर्टल।
- सेमी कण्डक्टर फेब।

नागरिक सेवाएँ

- सी.एम. हेल्पलाइन की शुरुआत।
- लोक सेवा प्रबंधन के तहत नई सेवाओं को शामिल किया गया।
- नागरिकों की सुविधा के लिये डिजिटल लॉकर।
- एम.पी. मोबाइल सेवा में 120 नागरिक सेवाएँ।
- ई-खसरा नकल योजना की शुरुआत।
- ई-दक्ष परियोजना।
- राज्य की अधिकारिक ई-मेल सेवा की शुरुआत।

स्वास्थ्य

राज्य सरकार ने प्रदेश में सबके लिये स्वास्थ्य का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम को अमलीजामा पहनाया है। इसके फलस्वरूप बाल एवं मातृ मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ मिल रही हैं। शिशु मृत्यु दर 2003 के 82 से घटकर अब 53, मातृ मृत्यु दर 2003 में 379 से घटकर अब 227 तथा कुल प्रजनन दर 2003 में 3.8 से घटकर अब 2.9 हो गई है। वर्ष 2016 तक इन सूचकांकों को राष्ट्रीय औसत के नीचे लाने का लक्ष्य है। पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में गंभीर कुपोषण की समस्या को पूर्ण रूप से समाप्त किया जायेगा।

प्रदेश में संस्थागत प्रसव की संख्या वर्ष 2003 में 22 प्रतिशत से बढ़कर अब 86 प्रतिशत हुई। यह देश के किसी भी अन्य प्रदेश की तुलना में संस्थागत प्रसव में सर्वाधिक वृद्धि है।

सबका साथ - सबका विकास

हमारे लिए विकास का अर्थ, समाज के अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का विकास है।

'सबका साथ - सबका विकास' हमारा मंत्र है। हम वंचित वर्गों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। समाज के गरीब तबके को सशक्त बनाने के लिये हम प्रतिबद्ध हैं।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

विकास के पथ पर मध्यप्रदेश

उपलब्धियों 10 के वर्ष

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क का प्रकाशन

विकास के पथ पर–मध्यप्रदेश
उपलब्धियों के 10 वर्ष

पिछले एक दशक में मध्यप्रदेश की नयी पहचान बनी है। बीमारू कहा जाने वाला यह प्रदेश गत दस सालों में न केवल अपनी इस छवि से मुक्त हुआ है बल्कि सबसे तेज गति से विकास करने वाले राज्यों में शामिल हुआ है।

यह संभव हुआ है एक ऐसे नेतृत्व से जो दूरदर्शी, प्रगतिशील और नीतियों पर आधारित है।

भौतिक अधोसंरचना के निर्माण में बिजली, सड़क, पानी जैसे क्षेत्रों में प्रदेश ने अभूतपूर्व प्रगति की है। वहीं मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार, ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में प्रदेश ने नयी ऊँचाइयाँ पाई हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की रणनीति, श्रम और भविष्यगामी नीतियों से आज मध्यप्रदेश को नयी पहचान मिली है।

सड़क

आज मध्यप्रदेश अच्छी गुणवत्तापूर्ण सड़कों के लिये जाना जाता है। वर्ष 1993 से 2003 तक राज्य सरकार ने सड़कों के लिये महज 2,907 करोड़ की राशि उपलब्ध करवाई थी। वर्तमान सरकार ने दस वर्ष में इस कार्य के लिये 25 हजार करोड़ से अधिक की राशि उपलब्ध करवाई है।

- मध्यप्रदेश में 2004 से अब तक लगभग 95 हजार किलोमीटर सड़कों का निर्माण और उन्नयन किया गया है। राजकीय राजमार्गों के 504 किलोमीटर को फोर-लेन में परिवर्तित किया गया है।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के दायरे में नहीं आने वाले गाँव में मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 12 हजार 471 किलोमीटर लंबी 5,836 सड़कों का निर्माण।

कृषि

कृषि प्रधान अर्थ-व्यवस्था वाले मध्यप्रदेश ने दस साल में कृषि विकास में अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल की हैं। बीते दो वर्ष से प्रदेश की कृषि विकास दर 24.99 प्रतिशत के आसपास रही है। इससे मध्यप्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश के आर्थिक विकास को बल मिला है। वर्ष 2013-14 के अग्रिम अनुमानों के अनुसार कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र में लगभग 24.99 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो अभूतपूर्व है। खाद्यान्न उत्पादन श्रेणी में कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त हुआ है।

सिंचाई

मध्यप्रदेश में कृषि के अभूतपूर्व विकास में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस दौरान वर्षों से अधूरी पड़ी सिंचाई योजनाओं को पूरा किया गया, नई योजनाऐं स्वीकृत करते हुए बलराम ताल जैसी अभिनव लघु सिंचाई योजनाएँ शुरू की गईं।

- मध्यप्रदेश में वर्ष 2004-05 में मात्र 7.5 लाख हेक्टेयर में सिंचाई क्षमता का उपभोग किया गया था जो वर्ष 2014-15 में 30 लाख हेक्टेयर हो गई है।

बिजली

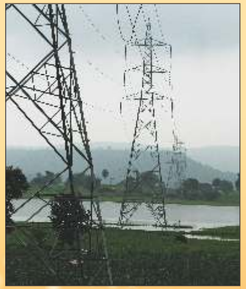

अटल ज्योति अभियान के सफल क्रियान्वयन द्वारा आज मध्यप्रदेश के घरेलू उपभोक्ताओं को 24 घंटे तथा खेती-किसानी के लिये 8 घंटे से अधिक बिजली उपलब्ध हो रही है। मध्यप्रदेश में वर्ष 2004-05 में बिजली की उपलब्धता 6000 मेगावॉट थी, जो वर्ष 2013-14 में बढ़कर 14 हजार मेगावॉट से अधिक हो गई है।

नगरीय प्रशासन एवं विकास

शहरों की अधोसंरचना विकास पर पिछले दशक में विशेष ध्यान दिया गया है। आज प्रदेश के शहर विकास का इंजिन बने हैं।

- पिछले दस वर्ष में नगरीय विकास का वित्तीय प्रावधान रु. 722 करोड़ से बढ़कर 6,132 करोड़ हो गया है।
- मुख्यमंत्री शहरी अधोसंरचना विकास कार्यों के लिए 184 निकायों द्वारा वित्तीय संस्थाओं से ` 784 करोड़ का ऋण अनुबंध हुआ जिसके 75% का पुनर्भुगतान होगा।

ग्रामीण विकास

मध्यप्रदेश की 72 प्रतिशत आबादी गाँव में रहती है। राज्य सरकार ने गाँव में शहरों की तरह सुविधाएँ और अधोसंरचना उपलब्ध करवाने के लिये सुविचारित प्रयास किये हैं। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के विकास तथा वहाँ रहने वाले सभी वर्ग के लोगों की बेहतरी पर भरपूर ध्यान दिया है।

उद्योग

प्रदेश के औद्योगिक विकास को पिछले दशक में नयी गति मिली है और आज प्रदेश निवेश की नयी मंजिल के रूप में उभरा है। उद्योगों के हित में बनायी गयी नीतियाँ आज प्रदेश की पहचान बन चुकी हैं।

- पिछले दस वर्ष में औद्योगिक क्षेत्र की सकल विकास दर 15% रही। सेवा क्षेत्र में यह दर 16% रही।
- प्रदेश में 2004 से 2014 तक कुल 244 वृहद उद्योग स्थापित हुए, जिनमें रु. 47,029 करोड़ का निवेश हुआ।
- प्रदेश में रक्षा संयंत्र उत्पाद निवेश नीति लागू। म.प्र. नीति बनाने वाला पहला राज्य।
- नये उद्यमियों की मदद के लिये 100 करोड़ के वेंचर केपिटल फण्ड की स्थापना।
- प्रवासी भारतीयों के लिये ''फ्रेण्ड्स ऑफ एम.पी.'' पोर्टल प्रारंभ।
- ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2014 में 32 देश ने साझेदारी की और उद्योग जगत के 5000 प्रतिनिधि ने भाग लेकर, प्रदेश को नयी संभावनाएँ दीं।

पेयजल

सरकार ने 2018 तक सभी बसाहटों में प्रत्येक परिवार के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में 70 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन तथा नगरीय क्षेत्रों में 135 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के मान से जल-आपूर्ति सुनिश्चित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

नारी शक्ति का नव जागरण

- जेण्डर विश्लेषण : वर्ष 2001 की जनगणनानुसार मध्यप्रदेश में स्त्री-पुरुष अनुपात (अर्थात् प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या) 919 है जो वर्ष 2011 की जनगणनानुसार बढ़कर 931 हो गया है। यह शासन की महिला पक्षधर नीतियों और कार्यक्रमों की ओर एक बड़ा संकेत है। घटते लिंगानुपात के विरुद्ध बेटी बचाओ अभियान एक सार्थक पहल रही है।
- संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के लिये जननी सुरक्षा कार्यक्रम।
- लाड़ली लक्ष्मी योजना के अंतर्गत अब तक लगभग 20 लाख बालिकाओं को लाभ दिया जा चुका है।